Focus Group Discussion

Sitamarhi

नमस्कार! आपसे यहाँ मिलकर बड़ा अच्छा लगा और आप सबों को यहाँ आने के लिए धन्यवाद मेरा नाम डा0 संदीप किशोर है और मेरे साथ विनय भी हैं। हम आप सबों से आपदा के मुद्दों पर कुछ बात चीत करेंगे।

हम बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान से आए हैं हम बिपार्ड में काम करते हैं। हम यहाँ आपके समुदाय के सदस्यों से आपदा से जुड़ी कुछ जानकारी इकट्ठा करने आए है। जिससे आपके गाँव में आपदा से उत्पन्न परेशानियों को कम किया जा सके। हम आपसे जुड़ी जानकारी से कुछ प्रशिक्षण के लिए दिशा निर्देश प्राप्त करेंगे तथा इससे आपके क्षेत्र में आपदा से जुड़ी घटनाओं को कम किया जा सके। इस परिचर्चा में लगभग एक से डेढ़ घंटा लगेगा और इसमें भाग लेना आपकी इच्छा पर है। सहभागीता के लिए आपका कोई खर्च नहीं होगा। और आप जब चाहें तब इस अभ्यास को छोड़ सकते हैं। इस अध्ययन से जो सूचना निकलेगी उसमें आपका नाम शामिल नहीं होगा। परिचर्चा को गोपनीय रखा जाएगा। हम इस परिचर्चा को रिकार्ड करना चाहेंगे जो क्योंकि हम नहीं चाहते की आपकी कोई भी बात आपसे छुट जाए। अध्ययन टीम के अलावा इन टेपों तक और किसी की पहुँच नही होगी और कोई नहीं जान पाएगा की इस टेप में किसकी आवाज है। हम बातचीत के दौरान बीच बीच में फोटो भी लेना चाहेंगे। अगर कोई व्यक्ति ऐसा है जो नहीं चाहता उसकी फोटो रिपोर्ट में या प्रस्तुती में आए या फिर वो फोटो ही नहीं खिंचवाना चाहता तो पहले ही बता दे। हमें उम्मीद है कि यह आपको मंजूर होगा।

यह परिचर्चा अनौपचारिक ही चलेगी और हम आपको न सिर्फ सवालों बल्कि दूसरे व्यक्तियों द्वारा टिप्पणियों पर भी प्रतिक्रया के लिए पूछेंगे। हम समय–समय पर सवाल मुद्दे खड़ा करते रहेंगे और यदि कही हुई बात साफ नहीं है तो हमे कृपया बता दें ताकि हम आपको विस्तार से उनका मतलब समझा सकें। आखिरकार हम यहाँ सवाल पूछने, आपका सुनने के लिए ही आए हैं और उम्मीद करते हैं कि हर व्यक्ति इसमें हिस्सेदारी करेगा। यही वजह है कि हम शायद सीधे आपको आवाज दें। इस पर बुरा मत मानियेगा क्योंकि सबकी राय लेने का हमारा यह तरीका है।

क्या आप सभी लोग भाग लेने के लिए सहमत है ?

जी जी जी।

ठीक है। हम थोडा सबसे पहले जानना चाहेगे कि आप सभी लोग आपदा के नाम से अवगत है। जो लोग आपदा के नाम से अवगत है उसको विस्तार से समझावे आप सर कुछ भी ।

आपदा जैसे यहा हरेक साल बाढ़ उढ जैसे बाढ़ भुकंप महामारी जैसा बाढ़ से सर उलझते आए है। आपके अनुसार यहा बाढ़ सबसे बरी आपदा है।

जी। आपदा मे सर सबसे बड़ा बाढ़ है।

अच्छा।

और दुसरा अगलगी है।

और बाढ़ के बाद जो जललमाव जो होता है।

और।

..तीसरा तुफान जो आ जाता है।

तेज जैसे चकवात जिसको जो कहते है। इसमे सभी लोग भागीदारी किजीए। आपलोग इससे अवगत है। कि आपका जो क्षत्र है वह खतरनाक होता है कभी भी ।

जी जी जी।

इनके आलावा और कुछ इधर किस–किस तरह कि आपदा है। और कौन–कौन आपदा आपके उपर गुजर चुकी है। आगलगता है भुकंप है बाढ़ है।

बिजली से जो होता है वह भी आपदा होता है।

अच्छा यहा पर पॉच आपदा बताइऐ नम्बर से वान टु थ्री फोर करके।

.पहला मे बाढ़ है दुसरा मे अगलगी है। तीसरा मे चकवात से जुरता है। चौथा ठनका। नदी से आलावा पानी से भी बाढ आता है। एक डुब के भी मर गया है बरसा के पानी से।

पिछला भुकंप कब आया था सितामढ़ी मे।

.... अठारह सितंबर 2011. पुरे बिहार मे हि था। उससे पहले उन्नीस सौ अठासी मे बहुत बड़ा भुकंप आया था।

सुखार नही आया था।

.अभी तो फिलहाल नही है पहले है।

अच्छा बाढ़ जो आत है उसके बारे मे विस्तार से बताए।

.बाढ से बचने का उपाए है सबसे पहले कि नाव का। पॉच दस हजार जो वस्ती है तो वहा पर उॅचे जगह पर चिन्हत। करके वहा पर सबको इक्ठ्ठा करते है। घर मे पानी घुसा तो किसी तरह निकालते है।

भुकंप से बचने के लिए क्या किए है।

तैयारी तो है गॉव मे जनता को जुटा कर ग्रुप खोले हुए है। अगर भुकंप आवे तो खुला जगह मे जाना चाहिए। अगर घर मे गए हो तो उसके कात मे जाइए अगर चौकी है तो उसके अंदर ढुकिए।

या घर से बाहर जाते है।

तीसरा बता रहे थे कि आग भी लगता है तो उससे बचने के लिए क्या करते है।

सबसे पहले उसको पंपी सेट पानी से बुताते हैं । या अगल–बगल का फूस फास का घर तो उसको पहले उजार के बिगते है।

यहा अग्रलगी के समस्या अधिक देख रहे है अखिर इस सितामढ़ी में तो इतना आग क्यो लगती है।

इसलिए सर कि यहा पर गरिब का वस्ति है। झोपरी है तो अभी चालीस प्रसेन्ट घर फूस का है। ज्यादा फूस का रहने से ज्यादा ये होता है। बचाने के लिए बाल्टी से पानी बिगते है। फिलहाल बाल्टी से पानी निकाल कर बुझाते है।

एक आपसे पुछना चाह रहे है कि हमारी सरकार जो है जहा तक हो रहा है इन्दिरा आवास के कोशिश कर रही है। आपके जो बैगलौग जो है उसको टारगेट बढ़ा कर के दिया गया था। ठीक है। हम मानते है कि सबका आचानक पक्का का मकान नही हो सकता है। अगर फूस का घर है तो क्या उपाए करे कि कम से कम अगलगी हो।

इस सब का बहुत कारण है जगह कम होना घर पे घर है ।

जैसे मान के चलिए कि हम जॉच मे गए थे इन्दिरा आवास मे तो

अगलगी का एक हि कारण है कि जो जलावन जो युज करती है महिला लोग उससे अगलगी होता है। अगर गैस रहता तो नही हो सकता है।

अगर आप कह सकते है कि अगलगी को अगर पहले से तैयारी करे तो अगलगी को रोकने से बच सकते है।

इस बात को मानते है कि अगर गैस पोस्बिल नही हो तो हम तो ऐसे नही करेगे। कि आग लग जाए।

हमलोग तो कहते है कि जलावन से खाना करते हो ते हवा बहे तो बूता दो।

जैसे मुखिया जी बोले कि गैस के व्यवस्था कर दि जाए। तो वह तो संभव नही है डिजास्टर मैनेजमेन्ट है कि हमारे पास जो साधन है। उसमे हि कम से कम नुकसान हो। जैसे हम आपको बतला रहे है कि मानिक चौक उत्तरी मे हम गए थे। एक लाइन से देखे कि माहादलित का कम्पलिट वह फूस का बना हुआ था। अगर दिवार भी है तो वह भी फूस का ही था। छत जो है उसका वह भी फूस का ही था। वैसे है तो उसतरह से अगलगी का समस्या बहुत बन सकती है। हम वहा गए तो हमे एक जेहर मे बात आए। अगर फूस की जो देवाल है अगर उसको मिट्टी से अगर कर दिया जाए तो थोरी सी राहत जरूरी मिलेगी। अगर हलका भी चिन्गारी भी उसके लिए नुकसानदायक हो जाएगा। अगर फूस की घर हो तो। इस तरह का आपको उपाए ढुढना होगा। ठीक है बहुत अच्छा बात है।

.जबसे चापा कल हुआ है तबसे लोग खाना बनाते है तो उस जगह बाल्टी मे पानी नही रखते है एक दो लोटा रखते है अगर बाल्टी मे पानी रखे तो उससे भी मिनीमाइज किया जा सकता है। ऐसा भी होता है कि महिलाए लोग घर से काम करने चली जाते ही बाहर मे और छोटे बच्चे को छोर देती है घर मे उससे भी होता है।

ते इसका कोइ तो सौलुसन होगा। तो अगर जो भी मॉ बाप खाना बना कर बाहर जाते है काम करने तो खाना बनाकर के बच्चो को खाना रखकरके। तब जाए और बच्चो को निर्देश दे कि चुला नही जराए।

अगर खाना बनाकर चुला मुझा कर के जाएगी तो उससे भी बचा जा सकता है।

हा। अगर हर घर मे बालु घरा मे रखे तो उससे भी बहुत फायदा होगा। बहुत अच्छा लगा बात करके इतना। अब थोरा यह जानना चाहेगे कि आपके गॉव मे कोइ आपदा प्रबंधन का कमिटी है क्या।

जी है। आपदा के लिए उसमे धन इक्ट्ठा करे या जिसकी इच्छा नही है वह नही दे आपदा होने पर उससे मदद होता है।

दो जगह बताए कि कमिटी है।

जी। और तिलकताजपुर मे एक है।

अपलोग के यहा है सब। सबका चाहुगा के आपके पास कंटेक्ट नं हो जाए। जैसा बता रहे है कि आपदा प्रबंधक समूह है उसको आपदा मित्र कहिए। अच्छा लग रहा है कि यहा पर आपदा है और कोस है। अपना दो–दो रूपया जमा करके। उसी मे एक जोड़ेगे आपदा एक लिस्ट होता है। आपके गॅव मे क्या–क्या चीज है ऐसा है क्या। कितना नॉव है कितना बालु फायर के लिए रखे है बाल्टि। यह सब तैयारी किसके पास क्या है।

उस सब हमलोग कर रहे है।

अच्छा। कितने कुआ है कितना बाल्टि है ये सब लिस्ट बनाना होगा। किसके पास क्या है। अगर कभी हो सकता है तो उससे प्रखंड अंचल से भी सहयोग हो सकता है। हमारे लोग के इधर से। हमलोग को भी सुचित किजीए।

इसी जुटा हुआ एक है कि आपदा प्रबंधन का प्लान है क्या आपके गॉव लेवल पे टोला लेवल पे।

अलग–अलग करके ऐडीन्टीफाइ कर रहे है हमलोग।

बिडियो साहेब भी आए हुए है इसके सहयोग करके कर हि दिया जाए। बहुत अच्छा होगा। तो जिला मे मिंटीग हुआ था तो उसको फॉर्मेट है तो उसी प्रकार किजीए। इनको दिजिए और एक कोपि मेरे को दिजीए। और आपदा मित्र का ट्रेर्निग देकर कैसे क्या होगा उसी कोस से ही आप आपदा मित्र को पेमेन्ट भी कर सकते है। दो सौ चार सौ रूपया कर सकते है। तो जो भि किजीए उसका सारा का लिस्ट तैयार किजिए। ठीकउ है अब थोरा सा जानना चाहेगे कि पंचायती राज के विषय मे जानते है। वही पंचायती राज मे हमलोग कैसे डिजास्टर मैनेजमेंट को कैसे डाल सकते है। उसके विषय मे जानकारी है आपलोगो का।

.मानलिया जाए कि रोड ही है तो उसको चार पॉच फिट उची करदे ताकी लोगो को निकलने मे दिक्कत नही होगी। बाढ़ आने पर।

पंचायती राज का मतलब है कि इनही लोगो को पकर के जोड़ा जाए पल्स इन्दिरा आवास का जो योजना है। वैसे ही ।

.....ऐसे तो पन्द्रह लोगो को मिल गया मगर भइया इसको कैसे युटीलाइज करेगे बनाएगे। उसको को भी कोर्शिश करेगे कि छर सरिया लगाकरके।

उसी को करे डि आर आर इन्दिरा आवास से जोरिए तो आपदा जुरी करन हो जाएगा। वो भी वह भी जानकारी इनलोगो को होना चाहिए।

.....जितने भी हमारे पंचायत के मुखिया जी है। या सहरपंच है या सदस्य जो लोग है। उनको भी भेजा जाए कि क्योकि काम तो वही सबसे ज्यादा करते है।

हमलोग को मुखिया जी को बुलाकर इसमे ट्रेर्निग दिया जाए आगे। हरेक पंचायत पर लोगो को ट्रेर्निग दिया जाए। सारे प्रतिनिधी को है जो कि ट्रर्निग दिया जाना है। ठीक है हमलोग अभी ट्रेर्निग वाजित करने जा रहे है। लेकिन उसमे तो विषय तो अन्य है लेकिन आपदा को उसमे रखा गया है। अपने यहा जो चापा कल के जो बात है अपने दरवाजे के सामने हि लोग बोलते थे कि गरवा दे तो लोगो को बताए कि इस चापाकल जो है जो ऐसे जगह पर लगाए कि। उसजगह बीस पचीस आदमी उसका इस्तेमाल कर सके। तो अपने स्तर से हमलोग भी ले ना। जो। भी कर रहे है उसमे डिजास्टर मनेजमेन्ट का भी कन्सेप्ट को भी जरूर लाया जाए। सरकार के तरफ से जो हो रहा है वह बहुत अच्छा है इसमे आपलोग सभी मिलकरके। मुखिया लोग मिलकर इस काम को किजीए। और डेकुमेन्टसन किजिए। तभी पता चलेगा कि आपके यहा काम क्या हुआ और उसको भेजिए उसको आगे। तो इनको भी पास जाएगा तो हमलोग जानेगे कि इतना अच्छा काम सितामढ़ी मे हुआ है। सभी को जोरिए और हमभी अपने स्तर से जहा तक होता है तो हम इनलोग से बात करते रहते है।

.हमलोग ऐसा भी कर सकते है कि नौ दस पंचायत के लोग को बुलाकर के।

हा हप्ता या महीना मे एक बार भी किजीएगा। ठीक है बहुत बढ़ीया जानकारी मिल रहा है।

हम जानेगे कि आपलोग से कि फसल बीमा के बारे मे जानते है कि नही। जैसे आग लगता है या फसल बाढ़ मे बह जाता है। तो फसल बीमा है क्या।

हा है। डिजास्टर से बटाने के लिए कोप इन्सुरेन्स होता है नही।

फसल बीमा के विषय मे जानकारी है और लोगो को। इसको नोट करते है कि नही गॉव मे।

.नोट तो करते है। उसमे कॉपरेटीव या बैंक माध्यम से जो लौन लिया है।

ये आप कहा के बता रहे है आपके गॉव का।

पुरे बलौक मे होता है। कइ वर्षो के बाद 58.5 प्रसेन्ट का हिस्सा लिया था। बीमा करवाए हुए है।

सरकार के तरफ से तो काम ठीक हो रहा है लोगो को जानकारी होना चाहिए। इसको युनिट छोटा बनाया जाए ताकी युज हो सके।

. *एगरीकल्चर विभाग का चार बार यहा पर पत्र आता है तीन बार चार बार रिमाइन्डर आता है। लोग यहा से इस्सेस्मेन्ट करके भेजते ही नही। तो वह क्या करता है कि उसको पैसा खर्चा करके का दवाब होता है वह क्या किया कि नक्सा उठाया और इस परिवार मे पॉच आदमी और पुरे को डिस्ट्रीबीउट कर दिया। यहा के वह दे दिजीए यहा के वह दे दिजिए।*

ठीक बोले कि एग्रेसी जन्ता है। पंचायती राज का यही मतलब है कि हमारा पी आर आइ मजबूत हो तो

उस स बवह कल्कुलेट करके निकालता है। इस साल का कितना गिरा उसी तरह से।

हम बताते है कि हरेक पंचायत मे बीस पीआरए होता है। उसी तरह उसका सैलेक्सन होकरके। अंचल से दो पदाधिकारी रहते है और बीस पर होता है उसके अनुसार पर ।

किस गॉव मे कितना लिया जाए वह अपना करता है।

वह पी आर ए को मानकार या प्रखंड से या जैसे धान हुआ गेहूँ हुआ खेसारी हुआ। उचीत जो बीमा का मिलना चाहिए वह नही मिल पाता है।

ये तो आप बतलाए फसल बीमा अब थोरा बढ़ेगे लाइसटॉप इन्सुरेन्स पे। ये आपलोग को जानकारी है कि लाइसटॉप इन्सुरेन्स बीमा का।

जैसे जो बैंक से जो खिचा था।

आपलोग को जानवरो को बीमा करवाया जाता है ऐसा कुछ है आपलोग को जानकारी।

नही।

ठीक है अगला प्रश्न पर आते है हम कि कभी भी आपलोग के गॅव मे। या पंचायत पे या बलॉक लेवल पे। नुक्कर नाटक आपदा के लिए तो उसमे आप एकजुट हुए है।

बाढ आने वाली है ये हम ।

ठीक बोल रहे है पूर्वा अभ्यास कभी किए है। बाढ़ आया तो कैसे कहा। होता है ना।

राजपुर मे हुआ था। अगर बाढ़ से बचने के लिए लोगो को सिखाया जाता है कि तो उॅचे जगह पर जा सकते है।

जैसे होता है कि अभ्यास जो कि बाढ़ आने वाला है तो एक गॉव क्या करता है कि कैसे उॅचे जगह पर जाते है या कोइ बुढ़ा आदमी है तो उसको कैसे बचाएगे। जैसे एक बाढ़ आने से जैसे कोइ रिहलसल कैसे होता है कि नाटक होने से पहले होता है वह है नौट्रींक ऐसा हुआ है क्या।

हा।

जहा टास्क उस्क बने है वहा बनाने के बाद एक नौट्रीक होता है जहा–जहा टास्क बने है तो उसके बारे मे क्या फायदा हो सकते है उसके बारे मे जानकारी है। इसी मे है ना कि कहा जाता है कि छब्बीस जन्वरी गॉधी मैदान मे होता है पटना मे या झंडा फहराया जाता है। तो चार दिन पहले से ही प्रेड क्यो किया जाता है। अभी राष्ट्रपति जो आए थे तो पन्द्रह दिन पहले से हि किस रास्ते से आएगे कहा जाएगे किस रोड से जाएगे सकीट हाउस उसी दिन किया जाता है कि क्योकि उसी दिन होगा तो फेल हो जाएगा। तो पॉच दिन दस दिन पहले से उसक रिहल्सल किया जाता है। वैसे हि पहले नौट्रीक कर लेते है कि डिजास्टर आएगा भुकंप आने वाला है तो हमलोग पहले से हि तैयारी करके एक हो जाता है।

अब उसी जुड़ा अगला प्रश्न है कि किसी तरह का ट्रेर्निग आपलोग लिए है। आप लिए है।

हम लिए है। सर

आपलोग कोइ आपदा पर ट्रेर्निग लिए है।

.नही लिए है।

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है कि हमलोग किस लिए है और आगे क्या करना है तो अब ऐ बताइए। कि आपके यहा भुकंप आता है बाढ आता हैं अगलगी है और ठनका है। इसतरह को लेकर किस तरह को लेकर किस तर का ट्रेर्निग दिया जाए कि आपलोग बोलिए। बारी–बारी से बताइएगा तो हमलोग को ट्रेर्निग देने मे सुविधा होगा। तो आपलोग को भी जागरूक होना होगा तब कहिएगा कि यह काम काहे नही हुआ।

सर सबसे बड़ा आपदा है कि सपकट्टी वाला है। एक साल से बागमती से जुरा हुआ क्षेत्र वह जानवर यहा आ गया है तो यह समस्या है। फसल को एकड़ का एकड़ फसल नस्ट कर दिया। गेहूँ का फसल है आलु का ।

आपलोग को कहने का मतलब है कि खेत का जो इलाका है जो उस जानवर से कैसे बचाया जाए उसकी जानकारी कैसे दि जाए। कि वह फसल नष्ट कम करे।

रोकने का कोइ उपाए नही है। सबसे अच्छा फसल लगाया जाए नही कि वह खाए ही नही

ही ही ही। सही बात। जो जागरूक होगे उसको मिला होगा फसल का बीमा से फायदा। वह जिमेवारी मुखिया जी का है पंचायत राज्य का मतलब है कि सारा जिम्मेवारी मुखिया जी का है। और मुखिया जी लोगो को जागरूक करेगे। कि वह आए आए आगे ट्रेर्निंग ले तब हमलोग जाकर के कुछ कर पाएगे। क्या। आपलोग को क्या लगता है भुकंप पर किस तरह का ट्रेर्निंग दिया जाए जो आम जनता को सुविधा हो।

.अच्छा वर्षा वाला

अच्छा देखिए मैडम बहुत अच्छे बात बता रही है इसको आपलोग पहचानते है ना आपलोग ये एग्रीक्लचर ऑफिसर है तो ज्यादा ढंग से बताएगे। यही कहा जाए कि गॉव लेवल पर किया जाए तभी संभव है। ठीक–ठीक।

लिलगाए। एक उपाए है कि जगह–जगह पर लाल कपड़ा बॉध करके रख दिजीए तो नही आएगा। दुसरी बात है कि रात को आग जलाकर उसका रक्षा कर सकते है।

वो जो बोल रहे है कि ढ़ोल बजाएगा या आग लगाएगा तो सबसे आसान तरिका है बचने का। सरकार लेवल पर तो वह होगा वह ठीक बात है मगर यह लोकल लेवल पर यह ठीक बात है। क्योकि भुकंप ही आपदा नही है फसल खत्म हो गया यह भी सबसे बड़ी आपदा है। तो जो आपलोग जो ग्रुप जो बनाए है उसको किया जाए तो यह हर तरह से निवारण है। हमलोग हर चीज मे डेवलपर डीजास्टर को जोड़ देते है। आपलोग भी गॉव लेवल पर हर चीज को जोरिए गा। पुरे गॉव मे।

सब आदमी को जागरूक करे ऐसा नही कि जब बाढ़ आएगा तभी टास्क काम करेगा।

सभी लोग अपना नाम गॉव का नाम पंचायत का नाम और मोबाइल नं।

यहॉ जो बाढ़ को जो समस्या जो होती है। जो नाव चलवाना चाहिए था उस समय जब स्थिति पैदा होती है तो कुछ ऐसा इन्तजाम होना चाहिए। जिससे बाल बाल बचे। जैसे कि सरकार द्वारा कोइ ना कोइ प्रोविजन किया जाए कि कुछ–ना कुछ हो।

देखिए एकरा मे बहुत अच्छा सजेसन था। ये तो कलेक्टर साहब या बिडियो साहब जो ये लोग ऐसा चीजो से बंधे हुए है कि जो ये चचरी का ना बात है कि यह कोट मे प्रोविजन नही हुआ। आज से पॉच साल पहले लिप कोट मे आपका सजेसन को जगह–जगह के मिटींग मे रखेगे। ताकी यह लिप कोट मे शामिल हो जाए। जो पहले क्या था। अगर डौटर मर गया आपका तो आपको तीन हजार मुआवजा मिलेगा। अगर गॉय का बछरा मर गया तो पॉच हजार मुआवजा मिलेगा। अगर गॉय का बछरा बाढ़ मे बह गया । यदि गदहा मर गया तो। ऐको रूपया नही मिलेगा। क्योकि उसका को प्रोविजने नही है लिव कोट मे। अगर ये मुद्दा अभी भी उठाए कि गदहा भी एक जानवर है। उसको भी शामिल किया जाए बहुत लोग पालते है गदहा। तो गदहा का भी शामिल होगा। मोबाइल नं. लिख दिए। हमलोग भी रखेगे कि यह चचरी भी उपल्बध हैं यह बिहार के लिए नही होगा जहा बास है वहा तो चचरी है। कुछ ऐसे जगह है जहा बास का प्रोडक्सन होता ही नही है। तो चचरी वाला हमलोग शामिल करेंगे कि। टेम्पोरेरी रोड के लिए लोगो को यातायात को बहाल करने के लिए। कुछ मतलब होगा काम इन लोग। उन लोगो को कहेगे तो बीस डम्फर मिट्टी गिरवा देगे। चदरा लगवा देगे बास को बचाने के लिए सब कुछ करवा देगे। जेसीबी चार गो मशीन लगवा देगे। ये प्रोविजन है लिव कोट मे। यह काम कर देगे अगर चचरी कहिए गा तो नही लगाएगे। अगर हम दस गो जे सी बी मशीन लगवा देगे तो क्या फैदा होगा पॉच किलोमिटर तक कितना है वह डुबी रहती है। एक चीज इसमे और है जो अक्टुबर मे जो आम सभा योजना। जो– जो पास हुइ है। अगर हर एक पंचायत लेवल पर अगर एक योजना बनाए। जो इसमे कम समय का और एक लंबा समय का जो उसको पंचायत लेवल पर बनवा के और फिर उसको बलॉक लेवल पर वो जो जब तक योजना बन रहा है जबतक उसको आपदा को देखा जाएगा उस समय क्या सोचते है कि । यहा पर सोलर लाइट के जरूरत है वह योजना मे डालिए यहा पर पोखड़ा का जरूरत है वह योजना मे डलिए। अगर उस समय हम देखेगे कि जब आपदा आता है तो कितना उचा चाहिए। उस समय कि उसको उस योजना से भड़ा जाए। वह योजना जब मुखिया के यहा से आएगा बलॉक पर तो वह प्रोसेस मे जाएगा और शुरू भी होगा। लंबी–लंबी पंचायते है तो बाहर मे नही हो सकता है। जो गॉव के अन्दर जो घर भी है। उसको। सुनिए कि वर्षात के समय चचरी बनाना भी मुश्किल है पहले से वर्षात होती है ना।

Focus Group Discussion

Madhubani

नमस्कार! आपसे यहाँ मिलकर बड़ा अच्छा लगा और आप सबों को यहाँ आने के लिए धन्यवाद मेरा नाम डा0 संदीप किशोर है और मेरे साथ विनय भी हैं। हम आप सबों से आपदा के मुद्दों पर कुछ बात चीत करेंगे।

हम बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान से आए हैं हम बिपार्ड में काम करते हैं। हम यहाँ आपके समुदाय के सदस्यों से आपदा से जुड़ी कुछ जानकारी इकट्ठा करने आए है। जिससे आपके गाँव में आपदा से उत्पन्न परेशानियों को कम किया जा सके। हम आपसे जुड़ी जानकारी से कुछ प्रशिक्षण के लिए दिशा निर्देश प्राप्त करेंगे तथा इससे आपके क्षेत्र में आपदा से जुड़ी घटनाओं को कम किया जा सके। इस परिचर्चा में लगभग एक से डेढ़ घंटा लगेगा और इसमें भाग लेना आपकी इच्छा पर है। सहभागीता के लिए आपका कोई खर्च नहीं होगा। और आप जब चाहें तब इस अभ्यास को छोड़ सकते हैं। इस अध्ययन से जो सूचना निकलेगी उसमें आपका नाम शामिल नहीं होगा। परिचर्चा को गोपनीय रखा जाएगा। हम इस परिचर्चा को रिकार्ड करना चाहेंगे जो क्योंकि हम नहीं चाहते की आपकी कोई भी बात आपसे छुट जाए। अध्ययन टीम के अलावा इन टेपों तक और किसी की पहुँच नही होगी और कोई नहीं जान पाएगा की इस टेप में किसकी आवाज है। हम बातचीत के दौरान बीच बीच में फोटो भी लेना चाहेंगे। अगर कोई व्यक्ति ऐसा है जो नहीं चाहता उसकी फोटो रिपोर्ट में या प्रस्तुती में आए या फिर वो फोटो ही नहीं खिंचवाना चाहता तो पहले ही बता दे। हमें उम्मीद है कि यह आपको मंजूर होगा।

यह परिचर्चा अनौपचारिक ही चलेगी और हम आपको न सिर्फ सवालों बल्कि दूसरे व्यक्तियों द्वारा टिप्पणियों पर भी प्रतिक्रया के लिए पूछेंगे। हम समय–समय पर सवाल मुद्दे खड़ा करते रहेंगे और यदि कही हुई बात साफ नहीं है तो हमे कृपया बता दें ताकि हम आपको विस्तार से उनका मतलब समझा सकें। आखिरकार हम यहाँ सवाल पूछने, आपका सुनने के लिए ही आए हैं और उम्मीद करते हैं कि हर व्यक्ति इसमें हिस्सेदारी करेगा। यही वजह है कि हम शायद सीधे आपको आवाज दें। इस पर बुरा मत मानियेगा क्योंकि सबकी राय लेने का हमारा यह तरीका है।

क्या आप सभी लोग भाग लेने के लिए सहमत है ?

जी जी जी।

त आप आपदा के नाम से अवगत है।

अपगत है।

विस्तार से बताइऐ।

वही भुकंप बाढ़ सुखार दहार अगलगी ये सब जोखीम ही है। बज्रपात हो जाना आग लग जाना भुकंप आ जाना यही आपदा है।

आपलोग। याानी आपदा के बारे मे परिचित है। आपलोग बोलिए।

प्राकृतिक आपदा हुआ वही है। आपदा के मतलब हुआ कि सामाजिक तौर पर ठीक है उसको आपदा कहते है। और विपदा क्या है। विपदा प्रर्शनल होता है खास एक आदमी का क्षती हुआ तो वह विपदा हुआ।

चलिए आपलोग आपदा के नाम से परिचित है।

हु हु । बाढ़ क्षेत्र मे छेयासी का बाढ है। बेरानवे का बाढ़ है हमारे गॉव मे नवासी मे सर भुकंप आया है। और इग्यारह मे भी झटका दिया है। लेकिन छती नही पहुचा।

अगर एक मिनट भी होगा तो कोइ बचेगा हे हे । ओतने मे खत्म हो जाता हैं। छौ सौ स्कूल मे बच्चा का था तो पता नही चला कि कहा गया। तो वह रोडवा था ना एक मिनट रहेगा तब ता पलथलीया मार देगा एक तरह से तरंग है कोइ बच पाएगा। कही आग फेक रहा है कही लवा फूट रहा है।

आप बारी–बारी से बताए कि बाढ़ से बचने के लिए क्या–क्या करते है।

बाढ़ से बचने के लिए सबसे पहले। जो घर जो बनाते है। पहले मिट्टी भरते है ट्रेक्टर से या टाइर गाड़ी से या अपना या टोकरी से भर के उसके बाद घर बनाते है हमलोग। अगर उससे ज्यादा घर मे पानी ढुक गया तो घर मे मेचान बानते है। बास का होता है उसपे रहते है उसपर चुला लगात है। उसपर खाना बनाते है अगर कोइ पैसा वाला है तो नॉव लेता है और बड़े–बड़े बॉध पर चले जाते है। इसी तरह हमलोग किसी तरह टाइम बिता लिए सर।

आप बोलिए।

सबसे पहले तो हमलोग उची जगह बनाते है। बॉढ से बचले कि लिए बताए भाइ साहब तो हमलोग प्रयास करते है घर जो बनावे वह उॅची जगह पर बनावे। अगर हमलोग कोसी इलाका मे रहते है तो नॉव का व्यवस्था रखते है।

ये तो बताए कि बॉढ़ का और भुकंप का कैसे वयव्स्था करते है।

भुकंप के तैयारी के लिए ये करता है कि सर हमलोग का फूस का मकान है सर। जो बिल्डीग का जो स्टकचर जो बनाते है तो भुकंप से मकान छती ग्रस्थ ना हो इस टाइप का बनवाते है अच्छे कारीगर से बनवाते है। उसके लिए हमलोग को कोइ ट्रेनिंग नही दिया गया है। ये लोग अपने तरफ से सिख लिए है कि बाढ़ से कैसे बचा जाता है। बॉढ़ तो बराबर आत है और भुकंप तो आक्मिक बात है। देखिए कि अठासी मे आया उसके बाद हल्का–फल्का आता है। तो बच्चा को कह देतें है कि बाहर भुकंप आय तो चला जाना है या पलंग मे तरे चला जाना है या कोना मे चले जाना है। गली होकर ना भागे। इस सब अपने आप से समझा दिया गया तो इस सब बारे मे। ट्रेर्निग उनीग सुना दिजीए। हमलोग कि जानकारी इसकी नही है।

अगर आग कि बात करे तो आग से बचने के लिए क्या करते है।

आग से बचने के लिए सर हमलोग चुला जो बनता है खाना तो हमलोग को गैस चुला नही है। उस सब लगा कर खाना बनातेउ है तो सबसे पहले तो वहा उस जगह दो बाल्टी पानी रखते है ताकी खाना बानकार उसी जगह अभीलंब कर देना हैं। अगर सर गॉव मे आग लग गया तो जहा खाली जगह है वहा खड़ा हो जाएगे। तो कोइ उपए नही है पानी उनी का साधन नही है। कुछ नही है। अगर लगा तो सब आदमी बाल्टी मे पानी लेकर दौरते है रोकने का प्रयास करते हैं अगर दो तीन घर को तोर के हटा दिए तो उसमे नही लगेगा। अगर सर पुरा फलैट धर लेता है तो हटाने फटाने का कमे साधन रहता है। यही करते है कुछ हद तक सफलता मिलता है। हा। समान का चिन्ता नही रहता है आदमी का चिन्ता रहता है पहले हटाते है या माल जाल को खोल के हटाते है। अब क्या है कि माइक से हरेक रात मे मंदीर मे हो या मस्ज्दि मे एलांस होता है कि उस गॉव का एक आदमी एलांस करते हैं। छो बजे अपने–अपने खाना बनवा लो। या अगर किसी के घर मे ऑग लगेगा तो उसको पॉच हजार जूर्माना रखा जाएगा इससे हमलोग को मॉ बहन तो वह छे सात बजे तक अपना खाना बना लेती हैं। और ऑग को बुझाती है और पॉच सात युवा लोग हर जाती से चुनते है और हर घर जाकर सभी के घर मे चुला चेक करते है। अगर आग नही है तो बिलकूल ठीक है। अगर है तो उसपर समाजिक दंड होता हैं। अगर किसी के घर मे चुला मे आग पकरा गया तो पॉच हजार जूर्माना लगेगा। हरेक क्षेत्र मे ऐसा है या कुछ ही जगह मे।

कहा–कहा पर ऐसा होता है।

जैसे महासोली पंचायत और नौवतीया पंचायत और पर्वल पुर पंचायत या हर जो है हर पंचायत मे।

हर पंचायत मे आपलोग करते है ऐसा।

हा। ऐसा बात नही है कि हमलोग के यहा कमिटी बैठ जाती है। नौ से सात बजे तक अरे वह सभी लोग बात करता रहता है। डेराने मे मतलब से जुर्वाना लगता है।

अभी जो बताए मानवजनीत आपदा। ऐ जो बताए डकैती वाला और क्या है मानवजनीत आपदा। और उससे कैसे निपटते है उसके बारे मे बताए।

हमारे अंचल मे एक फंड है जो भी अग्नि कांड से जो पिंडीत होता है लोग उसको उस आवास के लिए उस मत से पैसा मुहैया होता है। इसको सरकार बंद कर दिया है जिसके कारण अंचल और बलॉक मे होते रहते है। ऐसे बहुत सारे जगह है जहा पर अग्नि कांड हुआ था। यही सब सेम प्रोबलम है। सरकार जो एड करके दो हजार पॉच आया था अपना। उसमे प्रोविजन दुसरा था मगर लगता है कि उसमे तबदिल लाना परेगा। तो वह डिडेक्ट नही होता है कि वह राशि कहा है किस मध्य मे है। तेा ऐ बात उपर जाना चाहिए।

जी जी जी।

ये तो बहुत अच्छे बताए अब थोरा बताए कि मानव जनीत आपदा से कैसे निपटते है बताए।

रोड एक्सिडेन्ट बच्चे जाते है पढ़ने तो रोड किनारे अच्छे से चलिए। तो गारी वाले पिले मे चलाते है तो वह अपने मे ध्यान रखते है।

चलिए ये सब आपलोग करते है अब थोरा जानना चाहेगे कि। आपके गॉव मे आपदा कमिटी है क्या।

नही अभी हाल मे सर आपदा कमिटी प्रखंड से । हरेक पंचायत मे पॉच–पॉच आदमी भरा है मगर अभी तक पद्रह पंचायत मे है।

कब यह काम हुआ है।

जनवरी फरवरीए मे हुआ है। तो उस समय से पन्द्रह पंचायत मे एक–एक कमिटी बना है। लेकिन उस कमिटी मे संसाधन नही है। हमलोग को तो पंचायत स्तर पर कमिटी का ये नही हुआ है। हर महीना के बुध वार को जैसे गर्मी आया तो हमलोग वहा आठ दिन पर बैठक कर रहे थे। अगर मुखिया जी से सुची लेकर लिख देते हमलोग तो उस कमिटी मे मुखिया जी भी है।

ये तो बताए पंचायत स्तर पर ऐसा गॉव स्तर पर भी है।

उसी पंचायत मे

गॉव का नाम क्या हुआ।

गढ़ गॉव।

अच्छा गढ़ गॉव मे आपलोग पॉच आदमी मिल के वहा कमिटी बना है।

नही और लोग है। एएनएम है प्रत्येक स्कूल के शिक्षक है। आठ नौ वार्ड सदस्य है मुखिया जी है।

अब जो जानेगे कि रिर्सोष का जो लिस्ट बनाते है आपदा के लिए। ये चीज होना चाहिए। तो ये सब चीज आपलोग के यहा रेडी है क्या।

अभी तो नही है सर। हमलोग लिस्ट बना रहे है कि सर नॉव किसके पास है और अगलगी के समय पंप सेट किसके पास है। बोरिंग कहा है चापाकल कहा है । ये सब बना रहे है हर पंचायत मे। गर गॉव मे बना है सब कुछ। एक हि पंचायत मे हमलोग काम कर रहे है।

आपदा प्रबंधन कोइ योजना कुछ है।

आपदा प्रबंधन योजना हमलोग बना कर दिए थे। डी आर एम के लिए क्रमांक बना रहे है सर।

बना रहे है।

जी सर बना रहे है। अब एक और कहना है कि सर जो पलान जो बन रहा है ना सर और जो कमिटीया जो बनी है। जो भ विकास योजनाए है। जैसे रिलीफ दे रहे है उस कमिटी के स्तर पर। वहा पूल बनना चाहिए वहॉ विद्यालय बनना चाहिए तो वह कमिटी करे इस बात को।

ठीक है। ये जो डिजास्टर मैनेजमेन्ट को उसमे कैसे जोरा जाए उसके बारे मे पलान किया जाए।

आउर चुकि मुखिया जी गरगॉव के बैठे हुए है। जैसे कि आपको इन्दिरा आवास बनाते है। क्या ऐसा बाढ़ के हिसाब से बनाते है। जैसे बगल मे खगड़िया जिला है उसमे देखे है कि बॉढ के द्रिष्टी से वह उसको उचा कर दिया है। उ जो है कि इन्दिरा आवास के पैसा मे होता नही है। उसको क्या करते है उसको कोइ दुसरा स्किम से करा लेते है। फूट फोर वर्ग तो काम के बदले आनाज योजना कितना काम चल रही है। प्रखंड स्तर पर। पता नही यहा चल रहा है कि नही। तो उसी तरह का

काम कुछ चल रहा है। चाहे। या वह तो होना चाहिए। यहा क्या करते है सर कि लोग अपने उतफ से लगाकर के लोग। अपना बनाते है। दस बारह पिलर बनाते है उसके बाद हमलोग कूर्सी देते है। अपना तरफ से पैसा लगा कर जहा छौ फिट बनाना है वहा पर नौ फिट दे देते है।

आप का सवाल बहुत ही सकारात्मक है उसको उस तरह नही दुसरे तरह से यहा पर रखिए।

जैसे हम बताता कोसी के लिए बताता हु। इन्दिरा आवास कोसी मिला के लिए यहा पर सरकार पैतालिस हजार रूपया दि। और चार हजार प्रति हजार इटा है। एक मकान बनाने मे सात हजार इटा लगेगा। उसके बात लोहा है सिमेंट है बेगैरह है। लेवर है मजदूरी है। धुलाइ चार्ज कैरेज जो है वह हमलोग को ढ़ाइ हजार लगता है। कोसी मे कोइ ऐसा सायद पाटी है कि वह मकान बनाए हुए है नही तो जितने भी। या गरिब या मजदुर किसान गरिब लोग है वही अभी तक मकान नही बना पाए है। मानलिया जाए कि किसी को घर खाली करना है तो उसके लिए क्या है समूदायक भवन का प्रस्ताव कुंछ ऐसा गॉव मे रखे है।

हमारे यहा आया टेन्डर मगर काम नही हुआ समझे ।

जो क्षेत्र गॉव का क्षेत्र है। हा। भगौलिक दिशा प्रत्येक साल बदलती रहती है। हा।

हमलोग के यहा स्कूल का पैसा आता है मगर बनता ही नही। सुपौल जिला है हमलोग के बगल मे कि वहा ऐसा बना हुआ है कि जो बॉढ आया कट गया तो यह फिर बना । तो यह हमारे जिला मे नही है। पंचायत भवन समूदायक भवन हो ये सब हमारे जिला मे कोइ प्रस्ताव नही है। वह सुपौल जिला मे है। स्कूल बनता है। हमारे यहा से स्कूल का पैसा वापस हो जाता है कैरेज है कुछ ऐसा भ है कि यहा पर जमीन को उचा करवा दे।

बाढ़ सबके लिए है।

गरिब सबके लिए है। और एक समूदाय भवन बनना चाहिए। और चापा कल जो है वह बाढ़ के समय डुब जाता है। क्योकि उसका लेयर निचे रहता है। पहला नम्बर कि आपलोग चापा कल का हाइट उचा कर दिजिए। इसका बहुत कमी है। इसका।

आपलोग को चापा कल का उचा पे गरवा कर और उसको चबुतरा देकर और सिरी लगवा कर बनवा रहे है हमलोग। कइ जगह हुआ है और यहा पर भी होगा तो यह भी विकास योजना मे। शामिल करना है। सौचाल भी बनवाना परेगा। जी।

सौचालय भी नही हैं । यहॉ सर तीन माह पानी से डुबा रहता है सर।

मैने किरण कुमार को कहा था कि इस पंचायत को तो इस सब बात पर सर आपको ध्यान देना हैं ।

ठीक है हमको यही पुछना था। जितने भी आपदा समस्या से जुरे हुए है लोग जब तक कार्य नही होता है तब तक कोसी अन्दर पलान नही बनता है। इसमे सबसे पहले फैदा होगा कि बिजली उत्पादन पानी का क्या होगा कि हमको समय पर सिचाइ भी मिलेगा। और सारे समस्या का हल हो जाएगा। रोड बन जाएगा।

हमलोग यही जानना चाह रहे थे कि आपलोग को पंचायत विकास योजना बन जाए तो उसमे जो हमलोग का डीरामएम प्रोगाम है उसको हमलोग उसमे डालेगे तो उससे विकास योजना पर फैदा हो जाएगा। तो इस सब बात से आपलोग सभी लोग सहमत है।

ठीक है। अब दुसरा प्रशन मेरा यह है कि। जो पंचायती राज्य संस्थाए है। उसका क्या समझते है कि । पंचायती राज का मतलब समझ रहे है ना।

आपदा को कम करने के लिए मुखिया का क्या रोल होना चाहिए।

नाव बनाकर हमलोग सबसे पहले नॉव का हि व्यवस्था करते है। सबसे पहले सब जगह का जरूरी है उसके बाद चापा कल का हम वयव्स्था करते ह। सारा जगह गॉव मे ।

आपदा कम करने के लिए आपको सबसे बड़ा योगदान है।

जी। अभी तक हमने देखा है जितने भी हमने ट्रेर्निग करवाया है। या हम गॉव मे गए है आदमी लोग से बात चीज हुइ है। हमारे आपदा का जितने भी बिन्दु है। इस बिन्दु मे बहुत सारे काम किया है। जिसका कारण क्या है सरकार किसी फिल्ड का पैसा आए उसको पंचायत मे खर्च करने के लिए इसके साथ एक चिठ्ठी भी आती है ि कइस पैसा से आपलोग इतना ही काम करे। एसडीम से वहा से सभी विभाग को चिठ्ठी चानी चाहिए कि ग्रमपंचायत मे एक ा अगर कही पहारी क्षेत्र है तो वहॉ भी योजना चहिए। अगर बॉढ़ का क्षेत्र है तो वहा अलग ढ़ंग से बनेगा। तो ऐसा नियम होना चाहिए। हमलोग अपना अनुभव बता रहे है कि हमलोग इ क्षेत्र मे। यह जो गॉव जो देख रहे है यहॉ पर हमलोग नौका यान करवाए थे। और सारे स्टाव को निकाल–निकाल कर सारे स्थान पर लेगए थे। उसके आलावा फिर वर्षा होने लगा तो फिर दुसरा समस्या हो गया तो फिर हमलोग वहॉ से चले आए। फिर ।

यानी आपलोग सभी लोग सहमत है कि मुखिया पंचायत उस लोगो को डीआरआर मे शामिल करना चाहिए।

जी। अलग से फंड भी मिलना चाहिए।

चलिए ठीक है।

एक भी पैसा डीआर आर मे खर्च करने के लिए नही है। कहा गया था कि नॉव नही बनाना है तब भी हमलोग बनाए थे क्योकि हमलोग को जरूरी था।

आपलोग डीआर आर के लिए आपलोग काम भी कर रहे है। पंचायत मिलकर आपदा प्रबंधन सबंधी कोइ भी कोश को कुछ ना कुछ राशि होनी चाहिए। तब तुरंत उसकी सेवा कर सके।

हमारे यहा एलेक्शन हुआ है और यह हस्त पुसितिका है यह ग्राम पंचायत करेगे। बिडियो वही काम करेगे सिओ वही काम करेगे। एस डियम वही करेगे डीयम भी वही काम करेगे। वही अनुसार डिआरआर मे एक लाख से पॉच लाख तक का काम उनके कोस मे कोइ भी पैसा हो तो डिआरआर के लिए करना है काम बचत करके कमिटी को बचाने के लिए। कि सभी मेम्बर बनना चाहिए डीआरआर के तहत।

बहुत–बहुत धन्यवाद अब हमलोग अगले प्रश्न पर आते है। आपलोग फसल बीमा या पशु बीमा के बारे मे जानते है।

किसान जो बीमा करवाते है पशु को उसे पशु बीमा कहते है।

अगर लोग फसल बीमा के लिए इच्छुक नही हो रहे है तो कही ना कही बीमा का फोल्ट है हमारे यहा बीमा साथे हो जाता है ऐटोमैटेकली हो जाता है । जब भ बीमा कम्पनी को यह कहा जाता है कि यहा सुखार हो गया है तो इसका क्षती पुर्ति दे तो या बाढ़ हो गया तो कम्पनी का आना हो जाता है। चार तरह मे भी नही बीमा करवा पाते है। दो ऐसी स्थिति मे सारे बीमा कम्पनीयो को प्रत्येक वर्ष जाकर उसको रिर्पोटिग करे और कि लौस हुआ है कि नही। अगर नही हुआ है तो अगर हुआ है तो किसान को फैदा पहुचाएगी। यह एक फोल्ट है। बीमा तो करती है कम्पनी लेकिन किसान जो दावा करते है। बीमा कम्पनी का कहना है कि किसी भी अपना पदाधिकारी से अपना रिर्पोट करवाए। अगर यहा तो लाल फिता जो है अगर उसको घुस नही दिजीए गा तो काम नही होगा। पैसा पर काम होता है सर अभी इसी गॉव मे किसान वाले को माफी हुआ लेकिन हमारे प्रखंड वाले लोग अगर घुस नही दिया गया या कौपरेटीव वाले पदाधिकारी को ऐसा कोइ ऐसा बीमा नही है कि नही हुआ

है। वही कि बार–बार खरदाया मगर उसका लाख नही हुआ है। अभी तक यहा पर कोइ किसान ग्रुप नही है सेल्फ हेल्प ग्रुप नही है। अभी तक पॉच दस आदमी को लौन मिला है उसमे एक प्रश्न रखा गया था कि आप यहा बैंक मैनेजर उपल्बध है और डीआरआर के माध्यम से बात हो रही है। आप इसमे क्या करना चाहेगे। कि आपके किसान को आपेस जुझने के लिए एक बल मिले। लेकिन वहा पर स्पस्ट रूप से कुछ भी नही कहा। अभी तक पता चला कि अभी तक इस गॉव मे किसी को लौन नही दिया गया।

और इस इलाके मे अगल–बगल मे सेल्फ हेल्प ग्रुप है क्या।

बहुत सारा है।

आपदा वाला काम होता है क्या।

कितना समूह बना है।

बारह तेरह समूह बना है। यहा मार्केट नही है अच्छा।

दुसरा प्रश्न था मेरा कि पशुधन बीमा के बारे मे जानते है क्या। जो गाय भैस का जो होता है।

लौन लिए थे तो बीमा हो गया पशुपालन बाकी नही इसकी यहा बहुत जरूरत है। यहा।

अच्छा आपलोग कभी भी आपदा के लिए प्रशिक्षण किए है क्या।

जी ब्रेले ना सर कि दो बार किए थे। कैसे बच सकता है उसका पहले से तैयारी कैसे करते है। इसमे सर करवाया था कि राहत और बचाव का था। जी सब लोग ट्रेर्निग लिए हुए है आपदा के लिए।

अच्छा नुक्कर नाटक या टबलेटर ऐसा कोइ कुछ–कुछ किए है क्या।

जी सभी लोग किए है। और किए है कि रस्सी लगा कर कैसे–कैसे चढ़ना। सबका अलग स्टक्चर करके बताया था।

इस सब चीज का ट्रेर्निग आपलोग लिए है।

जी जी जी।

गॉव मे कितना लोग जानता है।

गॉव मे कहा लोग जानता है। सर कहिए ना कि गॉव लेवल पर ट्रेर्निग होना चाहिए।

बस।

जैसे हमारा बकुला पंचयात मेरा घर हुआ। तो बकुला पंचायत को ऐसा उसमे हमही जानते है इसका पंचायत स्तर या गॉव स्तर पर इसका ट्रेर्निग होना चाहिए। हम जहा है या आप जहा है वहॉ पर एक–एक वयक्ति को प्रशिक्षण देना चाहिए। जी।

नही नही ठीक है आपलोग इनके बात से सहमत है। ठीक है। आपके अनुसार आपदा प्रबंधन या आपदा जोखिम कम करने के लिए किस प्रकार के प्रशिक्षण कि व्यवस्था है। किस तरह का ट्रेर्निग दिया जाना चहिए।

हर तरह का दिया जाए जिस तरह का आपदा आता है। हर तरह का ट्रर्निग होना चाहिए। जैसे– मे बाढ़ आ गया कैसे बचेगे आग लग गया तो कैसे बचेगे। भुकंप से कैसे बचेगे अगर सॉप काट लिया तो कैसे बचेगे। या नौंव डुब गया तो कैसे बचेगे। अगर उनको कहना है सर कि अगर नदी है नदी से घर कट गया तो कैसे बचेगे। ठीक है। जैसे महामारी हो गया उससे बचा जाए। और समूदायक बीमा इस तरह का होना चाहिए। नॉच चलाने या तैरने और । सर ट्रेर्निग का ही नही जरूरी है जमीन पर काम चलाने का भी जरूरी है।

ओ तो है ही और क्या चीज कि ट्रेर्निग कि आवश्यकता है।

सर आपदा से जीतना भी जुरे हुए काम है उससे बचने के लिए किया जाए।

अगर आपदा के हि बारे मे कहना है तो हरेक पंचायत मे जोखिम है।

जो सर अपने स्तर से जो हमलोग को छुट गया है ओ अपने स्तर से कर दिजिएगा।

टास्क फोर्स को स्पेशल ट्रेर्निग होना चाहिए। एसएसमेन्ट के लिए। आपलोग को कुछ लगता है कि आपलोग के गॉव मे कोइ भोलैटीयर हो।

हमलोग बन चुके है। सर। बन चुके है। उसका स्पेशल ट्रर्निग हो रहा है। ये भुले नही कि यह ट्रर्निग हर तरह से होना चाहिए।

जी ठीक है आपलोगा अच्छी जानकारी दिए। आपके क्षेत्र मे जिस–जिस तरह के आपदाए है उसके बारे बताए और किस–किस तरह के ट्रर्निग होना चाहिए उसके बारे मे बताए। आपसभी लोग आए इसके लिए बहुत–बहुत धन्यवाद। और हमलोग अपना मोबाइल नम्बर छोर कर जाएगे कोइ भी को कन्टैक्ट करना होगा वह हमसे बात कर सकते है। हम भी आएगे और जो भी सवाल हो उसके लिए जुटते रहेगे और उसके लिए ट्रेर्निग कैसे करना है उसके लिए हमलोग पलान कर रहे है ठीक है।

Focus Group Discussion

Patna

नमस्कार! आपसे यहाँ मिलकर बड़ा अच्छा लगा और आप सबों को यहाँ आने के लिए धन्यवाद मेरा नाम डा0 संदीप किशोर है और मेरे साथ विनय भी हैं। हम आप सबों से आपदा के मुद्दों पर कुछ बात चीत करेंगे।

हम बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान से आए हैं हम बिपार्ड में काम करते हैं। हम यहाँ आपके समुदाय के सदस्यों से आपदा से जुड़ी कुछ जानकारी इकट्ठा करने आए है। जिससे आपके गाँव में आपदा से उत्पन्न परेशानियों को कम किया जा सके। हम आपसे जुड़ी जानकारी से कुछ प्रशिक्षण के लिए दिशा निर्देश प्राप्त करेंगे तथा इससे आपके क्षेत्र में आपदा से जुड़ी घटनाओं को कम किया जा सके। इस परिचर्चा में लगभग एक से डेढ़ घंटा लगेगा और इसमें भाग लेना आपकी इच्छा पर है। सहभागीता के लिए आपका कोई खर्च नहीं होगा। और आप जब चाहें तब इस अभ्यास को छोड़ सकते हैं। इस अध्ययन से जो सूचना निकलेगी उसमें आपका नाम शामिल नहीं होगा। परिचर्चा को गोपनीय रखा जाएगा। हम इस परिचर्चा को रिकार्ड करना चाहेंगे जो क्योंकि हम नहीं चाहते की आपकी कोई भी बात आपसे छुट जाए। अध्ययन टीम के अलावा इन टेपों तक और किसी की पहुँच नही होगी और कोई नहीं जान पाएगा की इस टेप में किसकी आवाज है। हम बातचीत के दौरान बीच बीच में फोटो भी लेना चाहेंगे। अगर कोई व्यक्ति ऐसा है जो नहीं चाहता उसकी फोटो रिपोर्ट में या प्रस्तुती में आए या फिर वो फोटो ही नहीं खिंचवाना चाहता तो पहले ही बता दे। हमें उम्मीद है कि यह आपको मंजूर होगा।

यह परिचर्चा अनौपचारिक ही चलेगी और हम आपको न सिर्फ सवालों बल्कि दूसरे व्यक्तियों द्वारा टिप्पणियों पर भी प्रतिक्रया के लिए पूछेंगे। हम समय–समय पर सवाल मुद्दे खड़ा करते रहेंगे और यदि कही हुई बात साफ नहीं है तो हमे कृपया बता दें ताकि हम आपको विस्तार से उनका मतलब समझा सकें। आखिरकार हम यहाँ सवाल पूछने, आपका सुनने के लिए ही आए हैं और उम्मीद करते हैं कि हर व्यक्ति इसमें हिस्सेदारी करेगा। यही वजह है कि हम शायद सीधे आपको आवाज दें। इस पर बुरा मत मानियेगा क्योंकि सबकी राय लेने का हमारा यह तरीका है।

क्या आप सभी लोग भाग लेने के लिए सहमत है ?

जी जी जी।

तो सबसे पहले हमलोग जानना चाहेगे कि आप आपदा के नाम से अवगत है।

बिलकुल अपगत है।

जैसे क्या है विस्तार से बताइऐ।

वही भुकंप बाढ़ सुखार दहार अगलगी ये सब जोखीम ही है। बज्रपात हो जाना आग लग जाना भुकंप आ जाना यही आपदा है।

आपलोग। याानी आपदा के बारे मे परिचित है। आपलोग बोलिए।

वही सब अन्धर कस के आया मकान उर गया । प्राकृतिक आपदा हुआ वही है। तो अगर मछली है और एकाएक सब मर गया तो वह भी आपदा है। है सर। आपदा के मतलब हुआ कि सामाजिक तौर पर ठीक है उसको आपदा कहते है। और विपदा क्या है। विपदा प्रर्शनल होता है खास एक आदमी का क्षती हुआ तो वह विपदा हुआ।

इतना आप बताए तो बहुत–बहुत धन्यवाद। चलिए आपलोग आपदा के नाम से परिचित है। कभी आपलोग को आपदा घटना हुआ है।

हु हु । बाढ़ क्षेत्र मे छेयासी का बाढ है। बेरानवे का बाढ़ है हमारे गॉव मे नवासी मे सर भुकंप आया है। और इग्यारह मे भी झटका दिया है। लेकिन छती नही पहुचा।

अगर एक मिनट भी होगा तो कोइ बचेगा हे हे । ओतने मे खत्म हो जाता हैं। छौ सौ स्कूल मे बच्चा का था तो पता नही चला कि कहा गया। तो वह रोडवा था ना एक मिनट रहेगा तब ता पलथलीया मार देगा एक तरह से तरंग है कोइ बच पाएगा। कही आग फेक रहा है कही लवा फूट रहा है।

जिसमे आप बताए आपदा उसमे से पॉच महत्वपूर्ण आपदा किसको बताएगे।

मानने के लिए तो सभ्भे के मानते है। आग लगी दुसरा चीज थोरा द्रिष्टी तिसरा है अति द्रिष्टी चौथा भुकंप का झटका है और बाढ़। पॉच हुआ।

ऐहो से जादा हमलोग के यहा क्षती होता है।

अच्छा अपलोग इनका बात से सहमत है।

हा हा।

अच्छा वर्तमान मे जो आप बताए बाढ़ तो उससे कैसे निपटते है।

बाढ़ से तो राम भरो से निपटते है। कोइ तो वयव्स्था तो है नही और नही आपदा प्रबंधन का कोइ आया है तो उसको लागे होने मे इसको भी अभी देर है। अगर बाढ़ अया तो जानवर इस पट्टी से उस पट्टी चला गया। अब छेहत्तर के ऐसा बाढ़ नही आया है। हे।

आपलोग बताए कि बाढ़ से कैसे निपटते है।

वही बताए ना कि बाढ आया तो घरे रहली दिया सलाइ खरीदने के लिए भी वयव्स्था नही हेलीकोप्टर से देखते तो हमलोग सोचते थे कि कुछ गिरावेगा। वह सर्वेक्षण कर रहा है कि बच गया कि मर गया सब। हे।

अच्छा भुकंप से कैसे निपटते है यहा।

भुकंप तो ऐसे अएबे नही किया है।
आप शुरू मे बता रहे थे कि आग के विषय मे तो आग से कैसे निपटते है।

आग मे तो पानी है या दमकल खबर करेगे। आग लगा तो पुरा बाल्टी–बाल्टी से बुझाना है ये नही देखना है कि किसी वर्ग का हो या किसी वयक्ति का हो। किसी जात का हो या रात हो या दिन हो बाल्टी लेकर निकल गए पानी कही भी हो उसको देना ही देना है। यही से हमलोग बच रहे है। यही कहिए कि गॉव के एकमत होने के कारण इस सब से बचते है।

अच्छा सुखार से कैसे निपटते है। आपलोग।

पहले सर बोडिंग नही था बाप दादा का टाइम था। जिऔरा मक्का खाकरके खेसारी एक दिन गुजार लेते थे। खुन करके करेते है पिछले साल पानी नही आया सारा चापा कल सुख गए तो एक चापा कल से बीस घर पच्चीस घर हो उसको रोकना नही है पानी पिजीए। लेजाइऐ इसी से निपटते है देहात के आदमी।

ये तो बताए प्राकृतिक आपदा अब मानव जनित आपदा क्या है। जो है बताए। उससे कैसे निपटते है।

जैसे बात है कि धुप से बचने के लिए जुता पहनते है हेलमेट लगाते है

हा।

इससे आपदा कम होती है। यही लोग को सुनाया जाता है और यही लोग करते भी है। अधिकांश यहा पर तो पच्चीस छब्बीस गाड़ी है टु बीलर यहा पर तो नही सुने है कि किसी का हाथ टुट गया किसी का माथा फट गया सब साइडे से चलते है।

यहा पर मानवजनित आपदा कम है। ज्यादा नही है। अच्छा ये बताए कि आपके गॉव मे या पंचायत मे आपदा प्रबंधन के लिए कोइ कमिटी है।

कमिटी तो बनवे किया है सर लेकिन गॉव मे हमलोग कमिटी बनाए थे लेकिन एग्रीमेन्ट नही हुआ। दो हजार नौ मे हुंआ यही ट्रेनिंग हुआ लगता है कि सो गए आपदा प्रबंधन लगता है हवा हवाइ हो गया।

अच्छा अब ऐ कहना है कि यहा पर कोइ लिस्ट रखे है कि बाढ़ का सुखार का तो ऐसा कोइ लिस्ट है।

उसमे हमलोग चार पॉच प्रस्ताव दिए थे।

ऐसा कुछ तैयार किए है।

हा हा हइये है।

अच्छा आपदा प्रबंधन के लिए कोइ प्लान है कोइ योजना। आपके गॉच पंचायत मे।

हइऐ है कि हमलोग प्लान बनाए थे ना तो उसमे। नौ दल का कमिटी बनाए थे उसमे प्राथमिक उपाचार वाले वयक्ति थे और सुचना प्रकार था। उसके बाद मे समूह था। नए टिम का उपयोग किए है।

यानी इसका आपलोग प्लान तैयार किए है। लेकिन डेबिट भाउचर नही हो पाया।

हा।

अच्छा आपका डिजास्टर रिस्क डिडक्सन जो शब्द जो आया आया है। आपदा जोखिम प्रबंधन इसके विषय मे जानते है कुछ डी आर आर ।

नही हमलोग नही जानते है।

ठीक है। आपदा कमिटी या प्रबंधन मे मुखिया का रोल रहता है।

बिलकुल।

पंचायत डेभल्पमेन्ट जो प्लान जो होता है। इसके बारे मे आप जानते है कि इसमे कैसे डीआर आर को जोर दिया जाए। इसके विषय मे कोइ जानकारी ।

नही।

जैसे ये चबुतरा बनाया हुआ है। तो यह विकास योजना तथा बैठने के लिए हुअ। इसको बाढ़ के समय और उॅचा बनाया जाए कि इससे बाढ़ के समय बचने का सोचे नही। ऐसा कुछ प्लान ऐसा शुरू हुआ है।

नही। कोइ प्लान शुरू नही हुआ है और इसके विषय मे भी जानकारी नही है।

अच्छा आपके यहा हाइ रेस्ट कमिटी सेन्टर या टॉलेट हाइ रिस्क हैंड पम्प ये सब है कुछ।

नही ये सब कुछ नही है आपदा प्रबंधनर के द्वरा नही है। जो एक दो पम्प है हाइ रेस्ट मे है। ओ दुसरे फंड से है।

विधायक फंड से है विकास योजना मे इस सब चीज को डाला गया।

हा। डाला गया। अच्छा।

अच्छा इन्दिरा आवाज योजना मे कुछ ।

कुछ राजमिस्त्री को ट्र्निंग करवाए थे। और भुकंप निरोधक घर बनवाने के लिए। सिर्फ ट्रेनिंग करवा के रह गए बाकी कुछ नही ना हुआ । तब। एकसब तो एक गरिब के घर बनता है पैतालिस हजार के तो कौन हिसाब से भुकंप निरोधी बनावेगा इसपर सोचा जाए। अरे पैतालिस हजार हइये है पॉच फिट गबरा करके। कर मिट्टी का तो वही समाप्त हो जाएगा। अगर नही बना तो तब भी एफ आइ आर है। तो हम कहे थे कि यह योजना को और पैसा मिलता है वह उसको सरकार के यहा लिखा जाए। कि गरिब वही जान है और अमिर का भी वही जान है विधायक जो घर बन रहा है उसका देखिए करोड़ो का हुआ है दो हजार देते है और बोलते है कि भुकंप रोधी बनाए। कहा से बनेगा। वह खपड़ा बनावे का कि भुकंप रोधी बनावेगा।

कैसे बनेगा। का करेगा वह मिस्त्रीया है। लेकिन यह पैतालिस हजार से कैसे होगा। अभी विधायक का बन रहा है।

भैया जो कहे सो आपलोग को ।

जो कहे वही सही है।

चलिए ठीक है। हमलोग को यह जानना है कि फसल बीमा जानवर के बिमा के बारे मे कोइ जानकारी है कुछ।

वही ना जानकारी नही है। जानते है मगर हुआ नही है। होता तो हमलोग को मसुरी का गुम्मा नही होता है। जनावर मर जा रहा है चालिस–चालिस हजार रूपया का। उसको बीमा रहता तो आज नही मिलता ।

ठीक है तो आपलोग को किसी तरह का मौल बेगैरह मे पाट्रीसिपेट किए है क्या जैसे क्या। आपलोग जो अभी आपदा का जो ट्रेर्निग हुआ है उसमे कभी पाट्रीसिपेट किए है क्या।

नही ।

आप।

हम किए है प्राथमिक उपचार का।

और। इसका आलावा।

और कुछ नही हुआ है।

किसी तरह का औपचारित आपदा पर ट्रेर्निग लिए है। आपलोग सबलोग।

नही।

अच्छा आपलोग ये बताए कि आपदा से बचने के लिए किस तरह का ट्रेर्निग दिया जाए।

आपदा तो कइ किसिम के ना है सर। हा। अलग–अलग से ढ़ंग से ट्रेर्निग होना चाहिए। बाढ़ का अलग होना चाहिए हमतो उसको कम कर सकते है लेकिन रोक नही सकते है। भुकंप को हम नही रोक सकते है। कम तो सकते है और आने के बाद बचाव कर सकते है। कुछ ट्रेर्निग रहेगा तब ना सर।

जीतना तरह का आपदा सबको प्रशिक्षण कि जरूरत है। आप सभी लोग इनके बात से सहमत है।

हा।

चलिए ठीक है। तो अभी तक आपलोगो के लिए मेरा इतना हि सवाल थे। आपलोगो को कुछ भी सवाल और पुछना हो तो मोबाइल नम्बर छोर के जाएगे या किसी भी समय आप हमसे बात कर सकते है और आपदा से जुरे कोइ भी प्रश्न ट्रेर्निग सबंधी प्रशन आप पुछ सकते है। इस सब के लिए आपका बहुत–बहुत धन्यवाद प्रशन का जवाब देने के लिए आपका और इस सभी मे सबका बहुत–बहुत धन्यवाद।